102	कबीर की भक्ति और लोक-संस्कार	बृजेश कुमार	806-809
103	सत्य और अहिंसा विश्वशान्ति का आधार	प्रा. डॉ. धुमाळे धोंडिराम कामाजी	810-812
104	स्त्री की आवाज : नासिरा शर्मा	योगेन्द्र सिंह	813-817
105	शाक्यमुनि गौतम बुध्द की अनमोल शिक्षा का सार : विपश्यना	कु. वंदना सदाशिव मोटघरे	818-822

HEAD
Dept. Of Dairy Science
Shivneri Mahavidyalaya,
Shirur Anantpal,Dist.Latur (M.S.)

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 4.374
UGC Approved Journal Sr. No.48455
ISSN No.2394-
Mar – 201
Issue–I, Vol

सत्य और अहिंसा विश्वशान्ति का आधार

प्रा. डॉ. धुमाळे धोंडिराम कामाजी
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख,
शिवनेरी महाविद्यालय, शिरूर अनंतपाळ

सत्य और अहिंसा के आधार पर विश्वशान्ति संभव है। विश्वशान्ति प्रस्थापित करने का एक गुरूमंत्र सत्य और अहिंसा है। महात्मा गाँधी सत्य की अवधारणा में इतने लीन हुए कि उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन ही सत्य की खोज में अर्पित कर दिया। सत्य के सिवाय अन्य किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं है। ईश्वर का सच्चा नाम सत्य है। वास्तव में "सत्य ही ईश्वर है" ऐसा महत्मा गाँधी कहते थे। सत्य गाँधी जी के विचार का केन्द्र बिंदु है। उसके अनुसार हमारा प्रत्येक व्यवहार और कार्य सत्य के लिए होना चाहिए। सत्य के अभाव में किसी भी नियम का सही तरह पालन नहीं किया जा सकता। वाणी, विचार और प्रचार में सत्य का होना जरूरी है। सत्य की अर्चना ही ईश्वर की सच्ची भक्ती है। उन्होने बताया कि जैसे एक रेखा में प्रत्येक स्थान पर बिन्दु होते है। वैसे ही जीवन या विश्व में प्रत्येक स्थान पर सत्य है। परन्तु जैसे रेखा में साधारणतः दर्शक बिन्दु को नही देख पाते। सत्य ही सिध्दी तो तभी सम्भव है। जब हम अपनी दृष्टि को सदैव निर्दोष और निर्मल रखें। विश्व के सभी व्यक्तियों कों सत्य को स्वीकार करना चाहिए। सत्य के सिवाय विश्वशान्ति असंभव है। आत्मशुध्दि के लिए सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रहमचर्य आदि उपकरण आवश्यक है। अन्तर्रात्मा की आवाज सत्य है। गाँधी जी के सत्य के क्षेत्र में केवल व्यक्ति का ही नहीं वरना समुह, समाज और विश्व का भी समावेश है। गाँधीजी के अनुसार सत्य का पालन धर्म, राजनिती, अर्थनीति में होना चाहिए। व्यक्ति और समाज का कोई पक्ष सत्य से विरक्त नही होना चाहिए। सत्य का पूर्ण पालन करना विश्वशान्ति के लिए एक अविस्मरणीय घटना है।

सत्य के साथ साथ अहिंसा का पालन करना हर व्यक्ति का एक नैतिक कर्तव्य है। विश्वशान्ति के लिए अहिंसा ही आवश्यक है। महात्मा गाँधी का अहिंसा पर ही विश्वास था। यदि सत्य और अहिंसा को निकाल दिया तो महत्मा गाँधी का विश्वशान्ति का दृष्टिकोण निर्जीव शरीर जैसा होता है। महात्मा गाँधी की अहिंसा कोई निषेधात्मक धारणा नहीं थी वरन् बुराई से अच्छाई को जीतने का सिध्दान्त था। सर्वोच्च प्रेम और आत्म बलिदान की धारणा थी। जिसमें घृणा के लिए कोई स्थान नहीं था। महात्मा गाँधी ने जीवन के व्यावहारिक प्रयोग से यह सिध्द किया कि यह ऐसा अमोघ शस्त्र है। जो कभी खाली नही जा सकता। अहिंसा को वैयक्तिक आचरण तक ही सीमित न रहकर मानव-जीवन की प्रत्येक परिस्थिती में लागू किया जाना चाहिए। गाँधी जी की अहिंसा मोक्ष प्राप्ति का ही साधन नहीं है। वरन् सामाजिक शान्ति राजनीतिक व्यवस्था, धार्मिक समन्वय और पारिवारिक निर्माण का भी साधन है।

महात्मा गाँधी ने समस्त मानवीय समस्याओं ओर व्यथाओं के निराकरण के लिए बहुमुखी अहिंसा का उपदेश दिया जिसे उन्होंने कभी-कभी प्रेम, मानव-सहयोग आदि की संज्ञा दी। उनकी एक मुलभूम मान्यता यह थी कि जन-साधारण के लिए तो आवश्यक ही है, नेताओं को विशेष रूप से इसका पालन कर

जनता के सामाने आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। अहिंसावादी नेताओं को अहिंसा के अनुपालन के लिए संयमी बनना चाहिए। अर्थात् सत्य, अहिंसा, ब्रम्हचर्य, अस्तेय तथा अपरिग्रह 'पंचशील' का पालन करना चाहिए।

आज राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में तथा समाजिक, आर्थिक समस्याओं के संदर्भ में गांधीवादी तकनीक और कार्यक्रम को प्रत्यक्ष परोक्ष रूप में व्यापक समर्थन मिल रहा है। जब जनता से विशेषकर पूंजीपतियों से, स्वेच्छापूर्वक आत्म-त्याग की बात कही जाती है। तो क्या यह गाँधीवादी तकनीक नही है। राष्ट्रो को अन्तर्राष्ट्रीय आचरण संहिता के पालन का आग्रह किया जाता है। संयुक्त राष्ट्रसंघ, हिंसा, नरसंहार, बीमारियों, आर्थिक विषमताओं, मानवीय असमानताओं का उन्मूलन चाहता है। तो क्या ये बाते गाँधीवादी दर्शन में सम्मीलीत नहीं है? क्या हम हमसे इन्कार कर सकते है कि दैनिक निजी सम्बन्धों से लेकर जटिल अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तक के सभी मानवीय क्रियाकलापों मूल रूप से प्रेम और सहयोग पर आश्रित है। वास्तविकता तो यही है कि किसी भी समाज में आज तक केवल बल प्रयोग से स्थायी शान्ति और व्यवस्था कायम नही की जा सकती है। विश्वशान्ति के लिए अहिंसा आवश्यक है। हर युग में सभ्य समाज का मूलाधार शान्ति और सहयोग की व्यापक भावना ही रही है। यहि हिंसा और असहयोग ही जीवन के नियम होते तो क्या मुठ्ठीभर सिपाहियों द्वारा शान्ति और व्यवस्था के प्रयत्न सफल होते? पुनश्च यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि युध्दरत पक्षों के विवादों का अन्तिम निपटारा शास्त्रों की टंकार से नही बल्कि युध्दोत्तर शान्ति-वार्ताओं द्वारा हुआ है। इसलिए विश्वशान्ति अहिंसा के बिना असम्भव है।

महात्मा गाँधी ने जिस अहिंसा, शानित और संयम का सन्देश दिया वह गम्भीर चिन्तन और क्रियान्वयन की अद्वितीय सामग्री है। जिसे ठुकराने में मानव जाति का कल्याण नहीं है। महात्मा गाँधी के विचार ऐसे नही है जो काल्पनिक हों और जीवन क्षेत्र में प्रयुक्त न हो सकते हेा। तभी तो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीती में तथा सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के संदर्भ में गाँधीवादी तकनीक और कार्यक्रम की न केवल भारतीय अहिंसावादियों ने बल्कि प्रमुख पाश्चात्य दार्शनिकों और राजनेताओं ने भी पुष्टि की है। इनमें बट्रैन्ड, रसोल, सोरोकिन, अर्नोल्ड, टॉयनबी, ममफर्ड, आईसटाइन, लॉर्डपैथिक लारेस आदि उल्लेखनिय है।

विश्वशान्ति के लिए आर्थिक और सामाजिक समानता :-

विश्व शान्ति के लिए आर्थिक और सामाजिक समता आवश्यक है। गाँधीजी ने अपने आदर्श समाज में आर्थिक समानता को काफी महत्व प्रदान किया है। उन्होने कहा कि अहिंसक स्वाधीनता की सर्वप्रथम कुंजी आर्थिक समानता है। इसका अर्थ हे, एक ओर तो उन मुठठी भर धनवानों के स्तर को नीचा करना जिनके हाथ में राष्ट्र की जादा से जादा संपत्ति केन्द्रित है और दूसरी ओर आधा पेट भोजन पर जीवन-निर्वाह करने वाले लाखों करोड़ों लोगों के स्तर को उपर उठाना। आर्थिक समानता प्रस्थापित करने के लिए महात्मा गाँधी ने का Trudteeship सिध्दान्त बताया है। गाँधीजी के शब्दों में "धनवान आदमी के पास उसका धन रहने दिया जाएगा, परन्तु वह उसका उतना ही भाग काम में लेगा जितना उसे अपनी जरुरत के लिए उचित रूप में चाहिए। बाकि को वह समाज के उपयोग के लिए धरोहर के रूप में समझेगा। इस तर्क में यह मान लिया गया है कि संरक्षक विश्वसनीय होगे।" प्रत्येक व्यक्ती अपनी सम्पत्ति को अपने लिए न रखकर समाज

की और से ट्रस्टी की तरह संभाले। इस सिध्दान्त के अनुसार निजी तथा अन्य सम्पत्ति में कोई भेद नहीं है। सभी सम्पत्ति, चाहे उसका स्वामी कोई हो, निरपेक्ष (Trudt) सम्पत्ति जानी चाहिए। यी सिध्दान्त भी पूर्णतः अहिंसात्मक है। इसलिए महात्मा गाँधी ने विश्वशान्ति के लिए आर्थिक और सामाजिक समानता आवश्यक माना है।

महात्मा गाँधी ने विश्वशान्ति के लिए सामाजिक समानता आवश्यक मानी है। महात्मा गाँधी ने सामाजिक समानता प्रस्थापित करने के लिए अस्पृश्यता का विरोध किया है। स्त्री-पुरूष समानता का समर्थन किया है। तलाक, पर्दा, विधवा विवाह, दहेज प्रथा, वैश्यावृत्ति का विरोध किया है। अस्पृश्यता समाज का एक अभिशाप, कलंक है। जिसे मिटाने के लिए गौतम बुध्द के समय से ही प्रयत्न होते रहे है। महात्मा गाँधी ने अस्पृश्यता निवारण को अपने सार्वजनिक जीवन का प्रमुख अंग बनाया। उन्होने कहा कि जब तक हम अछूतो को गले से नही लगाऐंगे, हम मनुष्य नही कहला सकते। उन्होने अपने आचरण से इस अन्याय का तिकार किया।

संदर्भग्रंथ सूची :-

1. हरि किशन — सामाजिक सर्वेक्षण एवम् अनुसंधान एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.)लि.दरियागंज, नई दिल्ली-2009
2. डॉ. राजकुमार अर्जुन — समाजशास्त्रीय अनुसंधान तर्क एवं विधीयाँ, पब्लिशींग हाऊस, दरियागंज नई दिल्ली-2009
3. डॉ. महादेव प्रसाद — महात्मा गाँधी का समाज दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ अनुवादक - विष्णुकान्त शास्त्री - 1983
4. मनोज कुमार सिंह आशुतोष कुमार — महात्मा गाँधी एक अवलोकन, के.के. पब्लिकेशन्स, अन्सारी रोड़ दरियागंज, नई दिल्ली -2007

Dept. Of Dairy Science
Shivneri Mahavidyalaya,
Shirur Anantpal,Dist.Latur (M.S.)